लाल फूलों की टहनी

लाल फूलों की टहनी

विनोदचन्द्र पाडेय



राजकमल प्रकाशन

प्रथम सस्करण १९६१

मूल्य ६ रुपये

प्रकाशक
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
दिल्ली

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय
प्रयाग

क्रम

लाल फूलों की टहनी

लाल फूलो की टहनी

जीवन भर की हलचल
जिन्हें न कर सकी शात
वे इच्छाएँ, क्या मृत्यु
सुला देगी यूं ही?

मुझ में अत के बाद
करुण और शोभामय
इनका जन्म होगा
कही और

किसी दुबली लडकी के
हाथ में कांपती
ये बनेंगी
लाल फलो की एक टहनी,
रोशनी करती शोर!

चिट्ठी

तुम्ही ने न कहा
शराब मत पीना
सम्हालो यह
अस्त व्यस्त जीना

इतनी मधुर तुम स्वय
इतनी हँसमुख
तुमने कब और कैसे जाने
हृदय के कठिन कठोर दुख

तुम पर तैरता है अभी
तरल बचपन
सिनेमा - गुस्सा - झगडना,
इनमे झलता - मन —

किसी ने कहा
तुम्हे खिडकी से झुके देख
न झुको ज्यादा
बाहर है तेज हवा
तेज पश्चिम की हवा

तो तुम इस तरह की
विश्व भार से हल्की
तुमने कहाँ देखा
उदासी का छायामय चेहरा
देखा - रखा याद
और फिर उस पर हँस दी

नहारगढ कल
झिलमिला रहा था
अंधेरे पहाड पर
बत्तियो से सजा
परियो का महल

मन मे आया, काश
जो जो सौंदय
तुमने देखे न
कुछ कम रह गए
सौदय में

तुम्हारी दृष्टि
सजीव करती थी
तुम्हारी उपस्थिनि

जाने के बाद

तुम यहा लेटी थी
तुम बैठी थी वहा
धुंधियाले – ऐसे ही समय
तुमने कुछ कहा था

नौकर बुहार चुका कमरे
सब अधजली सिगरटे
हँसी की आखिरी प्रतिध्वनि
समा चुकी दीवारो में

ओ लापरवाह

छोड दिया इस आसानी से साथ
उसी हँसी से चल दी
लापरवाह

जब भी मेह की बूदे
मुख पर खेलेगी
जब भी देखूगा
किसी दुबली लडकी को
बेसुध हँसते

लौटेगा तुम्हारी स्मृति का ज्वार
ओ लापरवाह

रूप और गुण

मुझे नही मालूम
क्या गुण हैं तुम में
और क्या नही

जव तुम्हे देखा
सुख से अशक्त था
मन को इस तरह की
फुरसत थी नही

एक छोटा - सा नाम
मेरे विश्व - को
भर देता गूज से
शायद गुण से
शायद रूप से

जवाब

तुम्हें, पश्चिमी हवा की तरह—
वे मुड जाते पेड
हर पत्ती फरफराती—

झकझोर कर पूछूं
क्यो न दिए तुमने जवाब

रात भर मन पुकारता रहा

निश्छलता

तुम्हारी निश्छलता से प्यार
भय लगता है
भाव हो जाते लज्जाशील
आकाश से चाँद
झाँक रहा है
तुम खुश हो फूलो को
हाथो में उछालते
मेरा मन काप रहा है

एक धुंधली रात

मुझे क्यों सहा तुमने
मुझमें क्या देखा तुमने
ओस से धुंधली रात
पश्चात्ताप ही पान को
मुझसे प्यार किया तुमने

छोटी छोटी बातें

मन तुम्हारे बारे में
क्या क्या सोच चुका
इतना आत्मीय बना
परन्तु मिलने पर
वही अजनबीपन
दो शब्द न बोल सका

मैं पूछना चाहता
छोटी छोटी बाते
किस करवट सोती हो तुम
जाड़े पसद है या बरसात
इतज़ार या अचकचा जाना
रोशनदानो मे धूप
और छोटी चिड़ियाँ
बाग से उठते ऊपर
झुड मे कबूतर
ओस सम्हाले
मकड़ी के जाले
यात्राएँ—घर लौटना
कमबख्त रहा झिझका

मैं और अँधेरा

मेरी नीद कल भी
खिडकी के सिरे से
चाद के डूबते ही
खुल गई, उस दिन की तरह

चादनी के सहलावे मे
तुम सो रही थी मधुर
सरकता किरणो का जाल
जा रहा था तुम्हे छोड
मेरे और अँधेरे के पास
हम दोनो अनुपयुक्त, सिर झुकाए
तुम्हारी चिन्ताहीन नियमित साँस

सुबह

तुमसे मिलने तक
सुबह ठहरी रहती है
अपना उजाला रोके—
फिर एकाएक होती है

असम्भव कार्य

इमसे ज्यादा क्या
हृदय की गोदी भरेगी
आँगन मे दौडती है
तुम्हारी हठीली ढीठ खुशियाँ

चिबुक से तुम्हारा चेहरा उठाते
शिला-से क्षण पर शिल्प करते
तुम्हारे नयन रह गए
निकटता बढाते

ये ग्रीक हीरोज के असभव काय
हवा-सी को बाँध लेना
अतीत की घुडसाल को बहा देना
एकाएक हो गए

•

उसका पक्ष दाग

गुनाह लगता है
तुमसे प्यार किया
और एक दाग
भी न लिया

तुम्हे देना चाहती थी
इतना
देने की आइ बात
दिया सिफ—एक दाग

।

उदासीन, बेवकूफ
। की तरह
से जल जाते थे
चुप रहना होता था

ष्टियाँ
बन जाती थी एक बिन्दु
ा कापता वक्ष
ा होता था

थी हमारे विश्व मे
वूरियाँ

उसका पक्ष एक मिलन

आँखें तो मेरे आने पर
व्यग्यमय थी—हँसती थी
चेहरा उदास था
आँखो में मन के विपरीत
मेरे लिए प्रयास था

तुम कई बार रूखे
कहते, कडवी बाते कहते
मुझ पर तो पडी थी मिलन की ओस
लापरवाह हो जाते है फूल
मै नही सहती थी कुछ
नयन मेरे तो मुग्ध थे

उसका पक्ष   काँपता वक्ष

तुम भोले, उदासीन, बेवकूफ
फुलझडियो   की   तरह
मेरी दृष्टि से जल जाते थे
और मुझे चुप रहना होता था

तुम्हारी दृष्टियाँ
मुझ पर बन जाती थी एक बिन्दु
मुझे अपना काँपता वक्ष
सहना होता था

कितनी भीड थी हमारे विश्व मे
कितनी मजबूरियाँ

—

जीवन तो उनका है
जिन्हें यह भार-स्वरूप मिला
माता-पिता का और फिर पति का
जिन्होंने मुझे बदलने की
कोशिश की
जिन्हें अधिकार रहा माँगने का

हृदय तुम्हारा है
मेरे जीवन से जुदा
जुदा उस सब से
जिसे सहना रोज
समाज ने मुझसे बिना पूछे
मेरा धर्म बनाया

तुम्हारा—
जिसका हृदय
मुझे देखते ही
हृप से डबडबाया

उसका पक्ष तुमसे तुम्हारे मित्र

तुमसे तुम्हारे मित्र
कहा करते होगे
'क्यो बिगाडते हो जीवन
वह नो वहा सुखी है
सम्हाल लो अपने जीवन के
लडखडाते कदम—'

कहते होगे
तुम्हे उदास हो जाते देख,
कहते है न?
मै भी कहती हूँ
मेरे ऊपर निभर न रखना
अपने प्यार को मुझसे स्वतन्त्र करना
(यहाँ सच कह दू—
मै चाहती हूँ—)
अपने प्यार को मुझसे स्वतन्त्र कर
मुझसे छूता हुआ–मुझ पर–रखना

उसका पक्ष खिडकी के बाहर

मैं तुम्हारे लिए सत्य भी हो सकती
वह खोज भी तुम्हें
मेरी ही ओर खीचती

खिडकी से बाहर
देख रहे हो प्यार
सडकों का दुख—सडको का शोर
मैं हो सकती तुम्हारे लिए
सडको की पुकार

किसी ऊँचे पेड से गिरती
कल कोई कल्पना तुम्हे
उत्साह मे—मुझमें विचलित कर दे
तुम जहाँ पहुँचोगे
वहा म पहले होती

उसका पक्ष मुझ पर गीत

मुझे भी लिखना वैसे ही गीत
प्यार की टूटती आवाज के
जैसे तुमने
  अपने पहले प्यार को लिखे थे

बीच के गुज़रे वर्ष भुला देना
यदि मेरा प्यार न उठा पाया
वर्षों का कड़वा कोहरा
यदि तुम न भले मेरी चिन्ता मे
समय का कलुषित करता स्पश
मैं भी न भूल सकूगी
  तुमसे पहले भी मेरे प्रेमी थे

उसका पक्ष विश्वास

जब मं बूढी हो जाऊँगी
जब बचूंगी सिर्फ दो हड्डियाँ
पोपला मुंह और झुर्रियाँ
तब यदि हुइ स्वतंत्र
स्वतंत्र तुम तब जाने को
प्रिय, सोचो
जब सौंदय की घुट चुकी होगी सास
म फिर भी भागती आऊँगी
—स्वतंत्र-तुम्हारे पास

उसका पक्ष   वरदान

जब तुम मुझे न चाहो पास
तब भी मैं रहूँ निकट
छाया-सी   सूरज-सी
अदृश्य   हवा-सी

तुम मुझको भुला सको
यह वरदान तुम्हारा—जब चाहो

उसका पक्ष रोज़ सहल

मेरा हृदय रोज़ सहल
भोर की रोशनी की तरह
तुम रोज़ जटिल
भावो की पूनी दूर खीचते
महीन और जटिल

असभव के खिलाफ
फडफडाता वक्ष
साँवली देह मे
प्रकाश की तरह उगो
मजबूरियो को सौम्य करते
हृदय से आ लगो !

अक्टूबर में विदाई

कुछ देर ही रहेगी
खुशबू तुम्हारी—यहाँ
हवा के हाथ भी
रह जाएँगे खाली

इस जगह था
इतना सौंदर्य—लाल रंग
इतना हर्ष एक हृदय में

असभव

क्या हैं सम्भव ?
क्या हृदय भरेगा ?
क्या यह मन से गहरा
असतोष उठेगा ?

मेरी कल्पना मे आ जाते
असम्भव-असम्भव कितने !
या उनके बीच बची
सारहीन घटन
कुछ नही बदलेगा
मैं - मन - जीवन

सम्भव तिरस्कृत सारे
और असम्भव असम्भव

टोस्ट

नप्ट करने यह
बीच का समय
हम मिले थे
और एक दिन मिलेंगे
नप्ट करने
सब समय
जो नही तुम्हारा
आज का, कल का
या पिछला

नष्ट कर देने

अनुपयुक्त

तुमने यह वहुमूल्य चीज़
किसे दी ?
एक शराबी
गली की सीढ़िया उतरता
गिर गया

मैं तुम्हारी याद का ताज
कितने दिन रखूँगा
कल्पना पर

तुमने एक दिन
प्यार किसे दिया ?
एक शराबी

बिट्रेएड

तुमने कुछ न समझी मर्य्यादाएँ
लाछन को सिर्फ
एक दुख और मान
कभी तुम्हारी भोली इच्छाएँ
और उनसे भी भोला
अपने सरल कपट पर विश्वास
ले गया सीमा के पार
समाज की क्रूर आँखो में
एकाएक प्रकाशित और असहाय

मेरा भी दोष उतना ही हो
तुम्हारे दोष मे तो दे सकूँ साथ

सौंदर्य

किसी और का सौंदय
तुम्हारे रूप के विपरीत
क्या मुझे मनाएगा ?
पूरी करते हैं बात
तुम्हारी कही हुई
सब प्रारम्भ और अत
तुम्हारे हैं

अनिद्य सौंदर्य क्या ?
तुम्हारे लापरवाह हँसने को
चुप किया–सँवारा–बैठा दिया

आउटसाइडर

कुछ ये पागलपन रखना
शासन की छाया में
स्वतन्त्रपन
किसी पर कहकहे में हँस सकना
तुम्हे पवित्र रखता
कड़ुवापन

बिलकुल वर्षों से हार न जाना
तुम्हे सोहता असतोष
पागल बाते सोचना-करना
प्रिय, समाज मे बिलकुल
अपनी जगह न पा लेना

आखिर तक गेना झुंझलाना

बरसात

तुमने कुछ क्रूर यह कर
तोड़ा संबंध
रखे नहीं—समाप्त किए द्वन्द्व

यदि यह मौसम तब आ जाता
प्यार, तुम खिड़कियों पर
मुग्ध रहने वाली
क्या तुमसे वह कहा जाता?

बिटर स्वीट

एक मामूली गलती कर दी
तुमसे हो गया प्यार
फिर जान गई उलझनी
आज इतने दिन—
यही था
मधुर और कड़वी

जिन्होंने देखा यहा
गँवाया यो पयो जीवन
अपना हृदय हुआ बच फिर
तुमसे हँस कर लिया
शायद क्या भूलना था

आज इतने दिन—
यही था
मधुर और कड़वी

कवच

चुप रहूँ या बोलूं
मेरे पास तक
कोई नही पहुँचता
यह अकेलेपन का कवच
तोड़ूँ — कैसे तोड़ूँ

जीवन चारो ओर
स्तब्ध या उफनता
मै जीवन से बेमेल
अपने तिक्त अहं को
खो दूँ—कैसे खो दूँ

इन्तज़ार में

एक हरा बाग है कहीं
संगमरमर की बाहें फैलाए
जो इंतजार में लेटा है
हमें मिलाने

हम कब पहुँचेंगे वहाँ
थक गए फव्वारे
पतझर पर पतझर की
पेड़ पत्तियाँ उतारे

तुम्हारी आँखें

ये दिन भी क्या
कहीं चले जाएँगे
पीले पतझरो से दवे
विषादहीन - आह्लादहीन

बुझाइ हो जैसे
सुबह होने पर
रात भर अधमरी
आशा की लालटेन

वे दो वडी वडी आशाएँ
तुम्हारी मौन हो गई आखे

इतनी इच्छाएँ

इतनी इच्छाएँ
हम लोगो की
एक दूसरे के प्रति,
कुछ न होगा?

समाज की प्रतिष्ठाएँ
बहुत समय से,
ज्यादा शक्तिशाली
भाग्य उनसे होगा?

यो ही बीतेगे दिन
हम होगे धुंधले,
इतनी इच्छाएँ
सिर्फ मुरझाएँगी!

जैसलमेर

जैसलमेर

रेत, शून्य, हवा
जीवन था कभी वहाँ
अब उड रहा चूरा चूरा

या, यह जीवन के पहले
रूप पा लेने की इच्छा,
वेगमात्र रूप बिना,

विश्व के अंत की राख,
या, समाधि में जीवन,

सीमाहीन नीरवता
कभी हवा का क्रोध
शून्य में गरजता

जीवन

जब हृदय पर कल
मृत्यु का भार होगा
क्या हृदय हल्का बनेगा ?
संतोष की स्फूर्ति देगा?

मैं एक हठीली लडकी के
प्यार में बिगडा था
और जीवन भर उस अपने से
अन्-उपयुक्त-सा रहा
मेरा जीवन कल्पना का ज्यादातर

एक खोज है और शायद शांति
शायद खोज ही है
हमें जीवन भर पीडा मे रख सकने
असंतोष है और अतृप्ति

आखिरी शब्द

हम पर चमका जरूर
एक प्यार का तारा
पर दिशाहीन कर
भटका डाला

एक दो प्रसग
उत्साह के भी आए
पर विशाल जीवन मे
क्या परिवर्तन लाए ?

आखिरी शब्द ?
ढूढता हूँ इस
शाश्वत दुख मे
कुछ करुणा से अथ

अकरुण

मृत्यु के सिवा
क्या किसी अर्थ से
सामना होगा ?
दो मुट्ठी कडवी राख
जीवन की

सावन में भी
लहर न आइ
—ठूँठ खडे पेड—
वह दाँतो तक छूती सिहर
झूले के पेग - सी
हरियाली की

कुछ बात मान लें, जिन्दगी
गँवाई जा सकती है, अविरोध
करुण दृष्टि जीवन पर
नही किसी की

रोज

सुबह की चिड़ियों ने कहा
जागे, शायद आज जागे
हृदय ने बडबडाया
आगे – देखो आगे

हर सूनापन भरा दिन
आया कहते यही
और यही कहते गया

उत्तर

सवाल भूल जाना
उत्तर है

अपना शून्य खूब जान
किसी दूसरे पर जीना
उत्तर है

न - जीने का असतोप
क्यो कि अज्ञात
जो मालूम है उससे
बच न सकना
उत्तर है

सवाल पूछने के बाद
भय से जो जागते देह-मन
उस नहीं - नही में
सवाल का परास्त होना
उत्तर है

सवाल का भूलना
उत्तर है

मेरी सुबह

सुबह   दूर अंतरिक्ष में
जरा गहरी छायाएँ —नीलगूं
धूल के बादल
मेरी सुबह   बूढे शेरो की दहाड

पीले फूल

जब धरती पर
बँधने लगी
घास की नर्म
उँगलियाँ सैंकडो

तब ही घूम गई धरती

पल्ला छुटा
पागल - सी हवा

मन के विश्वासघात
सैंकडो

नीली विषयुक्त
झाडी के फन में
खिले पीले फूल
सुगध – सबध हीन

चिडियाँ सवेरे सवेरे
सैंकडो

पूर्व की खिडकी

एक नया दिन
खिडकी पर रहा दिल
बदले मौसम की सुबह
उठा हूँ नई जगह
आज का प्रकाश भी लगता नया

पर क्या बदलेगा!
क्या होगा नया!
अपने हीन उत्तरदायित्व से
मुझे कौन मुक्त करेगा?

आता रहे प्रकाश
ये पूर्व की खिडकी पर कुछ क्षण
प्रकाश से घुल मिल जाना
सह-विचरण

सैल्फ नालेज

पा लेना अपने को
एक सकुचित
गव - हीन तत्त्व

यह कर सकूगा यह नही
आदरहीन सत्य
सवधो में और विलग

पा लेना – और क्या ?
भूलने में सिफ
वाधा के सिवा

जैसलमेर पर आकाश

झिलमिलाता रात भर
जीवनहीन आकाश
उन सैकडो सिकुडे तारो का
व्यथ प्रकाश

अच्छा ही है भोर का हाथ
मटियामेट कर दे
रिक्त सूनेपन मे उगी इकाईयाँ
प्रकाश के जल से भर दे

नींव

मन हो गया था अशांत
फूटे बुलबुले कुछ देर बाद
फिर वही सूनापन
फिर वही अवसाद

क्या बदलेगा जीवन का ढंग !
मेरी नींव उदासी की ।
कितने झड़ गए आकर मौसम
मन की बाहें एकाकी ही

सर्मापित

सौ दिशाओ मे उडा डालो
सूखा फूल यह मन
आओ बावली हवाओ
यह सूखा हुआ मन

जैसलमेर से पोकरन

सदियो का चुप चांद
आज मुस्करा पडा
चाँदनी इतनी जैसे
कोइ मुझसे बोला

मै देखता हूँ चारा ओर
कहाँ से कोइ
मेरे कडवे जीवन मे
खिलखिला पडा

मैं सो गया

ताल के किनारे ही
मैं सो गया
ऐसी हवा चली
गाव वालों ने कहा था
घास सूखेगी

म ताल के किनारे ही शिला पर
सो गया
सागर - सा उठता और
शान्त होता रहा मन
पत्तियाँ कुछ झकझोर
रात भर कहती रही
मैं सो गया

जैसलमेर (२)

यह क्या सुना मैंने
सुबह सुबह
आँख खोलते ही–
चिडिया ?

इस मरुथल मे
वसत आ गया !

कल रात तो थी
वही वीरानी
इतना स्नेह अब
हवा मे बहा

जैसे खिले हो
खिडकी पर फूल
चहचहा उठी—
चिडिया !

तन्द्रा

मन कुडली मारे
खुली खिडकी से सुबह
अर्थहीन - भावहीन
बस ऊब रह रह

अकेली नाव सरीखी
कल तक की बाते
जाती मन के पार
धीरे धीरे

इस खाली मकान मे
कोई तन्द्रा तोडता
वाली छोटी चिडियो की
धृष्ट आवाजे

जैसलमेर (३)

कभी एकाएक बरखा - सी
मन मोडेगी स्मृति
जैसलमेर का अटूट चुपचाप
मुझ पर छाएगा

श्रद्धा की झील

अपराधी

मुल्जिम को
कैसा लगता है
जुर्मवार
कटघरे में एकाकी
सब की अवहेलना
या घृणा
जड़ हुआ हृदय
भाव न बाकी

कैसे हो गया था
वह कृत्य मुझसे ?
कैसे मैंने समाज की
शत्रुता पा ली ?
मेरा भरा संसार
रह गया खाली

शरण

बुद्ध मे शरण मिले -मुझे
उसने ही मेरे जैसे
किए थे क्षमा

अपने मे सब अवगुण
उमर ने दिखाए मुझे
एक -के बाद एक - हताश

जरा भी कोइ
ज्योति न झलकी
क्या मुझमे- दिव्य आत्मा थी ?

अतीव सौंदर्य

मै मूढ वडवडाता मरूँगा
उस ही अतीव सौदय की वात
छलनी छलनी हृदय से
जिसकी न जाती वात

नीम की मुँह पर गिरती पत्तियाँ
जाडो की धार-मी हवा
शाप लाओ दुख लाओ
मृत्यु ला दो हवा

भूरी तरफ

उस भूरी तरफ नही देखना
अपराध पर सीमा है
बाधा रहित सीमा है
पानी पर पडा रग
एक बहती रेखा है
भले बुरे के कटघरे
छाया के पाए मैंने

फिर भी उस भूरी तरफ
उस डगमगाती मँझधार तरफ

उस अनुभव का तीतापन
चूम लो मेरी स्मृति
चूम लो मेरे मन

रह गया धब्बा मन पर
समय असमय लौटता
अपने से जो हताशपन

वह जा कर मिल जाना
विश्व के अपराधियो की कतार में
ठडी जेल जैसी सुबह

जब अखबारों में छपा जैसा
मन जान लेता अपने को
जो भुला - कभी देर तक
न भुलाया जा सकता

न फिसल जाऊँ उस
भूरी मँझधार तरफ
जहाँ धार बँटती है
उस भरी मँझधार तरफ

वही प्रश्न

मुझमें भी तुमने वही
प्रश्न रखा
मैं – मलिन नाचीज
खोए हूँ शांति उसी से

दिव्यता से कर मोह
हमने अपने हाथ
जकड़े पाए विश्व से

हर अभाग्य के लायक
मुझमें दोष
मैंने सदा कुछ अक्षम्य किया

आकाश के ललाट की
शांति मुझे दो

जूठा बर्तन

किस झूठी दृष्टि से
अपना जीवन देखूं
और संतोष करूँ

क्या रहा इन
जूठे बर्तनों में
न सौभाग्य - न कोई प्रण
अन्दर बाहर दरिद्रता

विश्व न हुआ दयावान
और विश्व ठुकरा सकने की
मुझसे गई पवित्रता

ऐसी सुबह

ऐसी सुबह
    क्या इच्छा
यदि न पवित्रता

भूल जाते पडोसी
कल रात की घटनाएँ
कजती धनी
निचली हरियाली

कलुषित हृदय
चाहेंगे ही क्या ?
अपने में बार बार
निराशा पा

इस दिवस से पहले समय
क्या इच्छा ?
यदि न पवित्रता

बुद्धानुस्मृति

तुम्हारी कही बडी बातो को
तुतलाने का मोह
मेरे मुख में सब अर्थहीन

एक क्षण को हृदय में तेज
धम्म में प्रवृत्ति आसीन

न जाने तुम कैसे थे
ज्योति से भर जाती है आँखे

श्रेय

क्या माप सकते हो पूर्वी आकाश
या तीस हजार विश्वो के कण
इतने श्रेय मिले

मैंने दी सब सम्पत्ति
ओह, बडा छुटकारा !

मने दी दया
और सहानुभूति
मैंने पढे बुद्ध - वचन
तथा उन्हे सुनाया

श्रेय—एक दिन मैंने जाना
मेरा नही सब का

वह पूर्णिमा

किसी उजडे नगर, पतझर की
आखिरी पूर्णिमा
आज भगवान जाएँगे,

धन्य हैं-जो दूर से चल कर
वह समुदाय देख पाए
धन्य वे भी जो देर से ही पहुँचकर
पदचिह्न पखार पाए

गाऊँ सघ की महिमा
धन्य वे भी जो आज
उस पूर्णिमा को मन मे लाए

छुटकारा

पारिवारिक जीवन कूडे का घूरा
उसकी राह स्वच्छन्द हवा
मुझे पूरा विश्वास बुद्ध पर

सब छोड चले, क्या चिडिया के पास
दो पखो के सिवा

जीवन के अत तक कह सकू
यही जन्म मेरा आखिरी जन्म था

धम्म हो मेरा प्रकाश
धम्म से मेरी शरण
न दूसरी धम्म के सिवा—

क्या अवकाश

ज़हरीले तीर से बिंधे तुम
क्या अवकाश पूछने का
मैं कौन हूँ? किधर से आया?

सिर्फ दुख, दुख के कारण
दुख से निर्वाण और मेरी
दुख से निर्वाण की राह
इस में शरण लो भिक्खुओ
जहरीले तीर से बिंधे तुम

दुख

जन्म से जन्म को जाते
    जो बहाए आँसू तुमने-उनका
खारापन ज्यादह है
    या चार समुद्रों का

राम

अपना बनाओ राम!
जान चुका सुखों की सीमा
अहं पर जिया जीवन
निकला मृगतृष्णा
तरस से बचाओ राम

नष्ट किया हृदय
धोखों से उजड़ी बुद्धि
देह क्षीण कुरूप
दीन क्षणिक प्राण
अयोग्य को अपनाओ राम

अपना बनाओ राम
क्योंकि दिव्य छाप
खो देता है जीवन
सरक जाती है हमसे
ज्योति की गाँठ
सबध बनाओ राम

जैसे ग्रहण की
बिंदी बढ़ती है
मुझ में बढ़ो राम
एक दो पत्ती से बढ़कर
बसंत-से आओ राम!

सत्य सब दुहराते हैं
वानरो के मुंह में शब्द

सदा रखना राम
मेरा हृदय धधकता
सत्य से ज्यादा अर्थ
अर्थ से ज्यादा पीडा

अपनाओ राम

आश्वासन

सुनी है मैंने तुम्हारे
आश्वासन की बात
कैसे नाम भर देता हृदय

—आँसुओ से भीगा पास्कल
पत्थर के कमरे में झुका

सब इन्द्रियो की प्रतीति
वह प्रकाश बदल देता

वह किसी पश्चिम की
हृदय से गहरी सुंदरता

न्यूमिनस

सुवह – न्यूमिनस
ज्योति के धुँधले
हल्के परस

साँसो मे जान कर सुवह
मै उठा – आँखे बन्द
हुए गुनगुनाता

मेरा – सौंदर्य का
दूर से छूता सवध

समाप्त

इससे ज्यादा प्रकाश
घेरे में लेगा ?
नही होता विश्वास

घड़ी की टिक टिक मे
जीवन बीतेगा

ओ ज्योति की चिड़िया
ले जाओ प्राण
असफल हुए प्रयोजन
मेरे और तुम्हारे

दिलवाडा

यहाँ भगवान नही तो
भगवान की स्मृति है

धूप और छाया भरा
सगमरमर का गभगृह

कितने आए गए चरण
श्वास को पवित्र किए
लम्बी यात्रा से धुली लगन

वे इतिहास मे छिपे भिक्षु
जिन्होने सँवारा यह शिल्प
कितनी सुन्दरता से सरस

आरती से पहले
कैसा कोमल अधकार
इस ठडे सगमरमर में सो
सुबह उठती सिर नवाए

यहा दिव्यता की गध
अभी शीतलता-सी है

श्रद्धा की झील

झिलमिलाती श्रद्धा की झील
    ओ तारो भरे आकाश
पीडा में घुल गया हृदय
    कुछ दो आस

एक बीमार लड़की

विज़िट

ट्वीड के कोट पर
दो पत्तियों का फूल
अस्पताल की
उजाले भरी खिडकियाँ
सूरज में नाचती धल

मुझे जो जो कुछ उदासी
जीवन से वंचित होने में
यह तुम्हारी विज़िट का घटा
तुम्हारी उँगलियाँ तन्मय
माथे पर बहके केश
वापिस लाने में
मुझे जो जो कुछ संतोष
तुमसे छुए जाने में

छत पर बनाए स्वप्न

नर्स के रखे सफेद फल
उतरे टैम्प्रेचर में थका मुख
'कुछ आकाश-सी अछूती बातें
सोच रही थी मैं,'

उपहार

तुम्हारे मुझे इतने उपहार
लाखों भूरे पार्सल
तागे का तोडना

स्मृति मे लाती हूँ
आखे बद कर
अस्पताल मे पहुँचे
सुबह शाम दुपहर

हर बार जैसे 'मुझे पहिचानो'
आखो पर हाथ रख कहता
तुम्हारा प्यार

काली नोटबुक

मैंने तो तुम्हे कभी
प्यार के उत्तर भी न दिए
इस काली नोटबुक मे लिखी
न कह पा सकने की व्यथा
कभी-आज-से बहुत दिनो बाद
इस पीडा की दिलाउँगी याद

विमूढ

मन रुकता ही नही
आगे हँसी में
निकल जाता
आइ वसंत की मूढता

आज तुम यहाँ हो
राजकुमार
धूप बादल चिड़ियाँ
रोशनी से प्रफुल्लित
दरवाजे खिड़कियाँ

आँख खोलते ही

मन भरा है मेरा
तृप्तियों से
कल शाम तुम आए थे

इस सुबह तक
बंद आंखों का अंधकार
पा लेता है तुम्हें

यहीं कहीं थम जाए
मेरी बीमारी – मेरी उमर

क्या आज सुबह भी
मैं तुम्हारी प्रिय हूँ

मुस्कराते मौन

विवाह के बहुत दिनो बाद तक
बस पसद था साथ बैठना
उँगलियो का उँगलियो से खेलना
उसकी हल्की सुगध – बातो का बहकना

हमारे उत्साही शब्द – सब राह चल आए जब
स्मृतियो का अनटूटा छोर
शब्दो के भाई-बहिन दौड आए जब
तब बने हमारे वह पहले मुस्कराते मौन
विवाह के बहुत दिनो बाद तक

प्रीमानिशन

हम उस दिन सदा-से
शाम को लौटे थे साथ
मील पर मील ठंडी हवा
बेबी देख रहा था शिकार
मन थके – मुरझाए
सूर्यास्त में छिपता छिपता सरज

तुमने क्यों कह डाला था-भाग्य
लगता है बीमार पड़ूं मैं
उसके बाद की भारी रात
उदासी और सिगरटें जीवन भर

परी आवाज़ें

तुम्हारे   पत्र   की
    कुछ मुंह लगी लाइनें
फिर फिर लौटती मन में

—सदा तुम जाओगी
    मेरे प्यार का कैप पहिने

—तुम्हें प्यार करने की तो
    मुझे हो गइ बीमारी
—बादलों से भराई सुबह
    निकम्मा कर छोड़ेंगी सुधियाँ

कल्पना में बटोर कर तुम्हे
मैं ठगी रह जाती हूँ
तुम्हारे पत्रों से परी-आवाज़े

वसीयत

यह तो मैं चाहती हूँ
तुम मुझे याद रखना
कुछ दिनों तक

पार्टी से बाहर निकल
टेरेस की रेलिंग्स पर आ
दिल्ली को मेरी स्मृतियों से
कुछ देर तक देखना

यह भी मैं चाहती हूँ —
तुम्हारे हँसमुख स्वभाव पर
न बनूँ सदा की छाया
दूसरी ड्रिंक में याद कर
आखिरी में भुला देना

आखिरी इच्छाएँ

किसी छाया के ताल में
नाव खुल जाए जैसे
मृत्यु होगी

चरण गीत खोई
आत्माओं का
क्या सब होगा
ठिठुरा ठिठुरा

उस कल्पनातीत प्रदेश में
यदि तुम्हारे हाथ मिल गए मुझे
क्या उनका स्वागत भी
मृत्यु से डसा होगा

एक था राजा

यदु और चन्द्रा

कितनी कम बची
दुनियाँ मे अब खुशी
सिफ तुम लोगो मे ही
यदु और चन्द्रा

आशाओ मे अविश्वास
विश्व हो चला बूढा
सूखे दुनिया के फल—बची हँसी
सिफ तुम लोगो मे ही
यदु और चन्द्रा

चन्द्रा (१)

चन्द्रा, तुम्हारे नाम की एक लडकी से
आज से कइ साल पहले
मैं मिला था

हम हो गए मित्र सीजन के बढते
यही मॉल या क्लब मे मिलते
हमें क्या मालूम था चारो ओर
गिद्ध से काका काकी थे

किसी ने देखी जात बिरादरी
किसी ने मुझे कहा शराबी
"ये तो अरे प्यार करता है
न जाने इसका चरित्र कैसा है"

फिर क्या–खतम हुइ कहानी
खुश हुए काका काकी नाना नानी

इस कहानी से नसीहत लेना
चन्द्रा, जब तुम बडी होना
यदि बुलाएँ किसी के लडखडाते कदम
काका काकियो की बजाय
हृदय की सुनना

चन्द्रा (२)

चन्द्रा, तुम्हारे हो ढेर से बच्चे
एक दो नही—कम से कम
दस तो लडके ही लडके

उन्हें पढाना लिखाना
डाक्टर इजिनीयर बनाना
और यदि कोई निकम्मा
लिखने लगे कविताएँ
तो चन्द्रा, उसे भी निभाना

बैलड (१)

वही विकेन्द्रित आँखे
शन्य छतरी के नीचे
महारावल राजाधिराज
किन्न विचार मे बैठे

सेना गई पश्चिम?
इन्द्रियाँ सुख से उबी?
किसी ठाकुर की बडी आवाज?
या वर्षा की कमी?

या हृदय का विकार वह—
प्रेम है कारण
जिसे ड्योढियो के नीचे
गाते गरीब चारण

महारावल राजाधिराज
छतरी के नीचे निराश
'भाग्य मे दूर-दो चमकीले नयन
मुझे कर गए हताश'

बैलड (२)

राजकुमारी की काली भौहे
भरे तरकश तीर
मुस्कराइ जिधर भी
बिंधी मन पीर

साँझ मे जैसे झिल्ली
दिन मे आकुल कोयल
राजकुमारी की चर्चा
रस भरी कोमल

गइ सहेलियो के साथ
गडसीसर के पनघट
उमर बदलने की अँगडाई
मन की पहली सलवट

'पाँच दीपो का मुकुट
ओ राजकुमारी
सोहे तेरा मुख

हवा मे जैसे ठड
ओ राजकुमारी
मन मे बसे सुख'

राजकुमारी उदास
बुज से देखती शाम
यह फैला राजपाट
मेरे किस काम

मुहूर्त — शहनाइयाँ
फलो की लडी
राजकुमारी बुर्ज पर
उदास खडी

क्या कभी न आएगा फिर
वह शात सवार
जिसने माँगा था पानी
मैने दे डाला प्यार

नल दमयन्ती

(१)

जगल मे जा रहा था नल
मिला देवताओ का दल
सजा धजा शान का
जगमगाते साज का

इन्द्र की नल पर गई नजर
'सुनो देवताओ, आकाश के ग्रह
मुझे एक सूझती बात
दमयन्ती के लिए कठिन होगा
पाना परिचय हमारे ऐश्वय का
गणेश की लम्बी नाक का
वरुण के गहरे रूप का
फिर क्वाँरी लडकी की बुद्धि ही तो है
फिर साधारण मानव तरुणी ही तो है
उसमे कहाँ शाति होगी तौलने की
हाथ जयमाला से भारी
उसे कुछ सोचने की सुधि भी होगी'

'इन्द्र, तुम्हारी वात का सुन लिया प्रारभ
कभी अन्त भी होगा' सूर्य बोला

'मै सोच रहा था अच्छा हो
यदि दमयन्ती को हमारा परिचय हो

वह जान ले ये नाटे मोटे गणेश
जीत चुके ह देवताओ की रेस

सर्य के घोडे किसी और से नही सम्हले
चन्द्रमा का सागर पर जोर जान ले'

शनि हँसे, 'कैसे होगा यह इन्द्र'!

'शनि, हमारे पीछे एक युवक आ रहा है
उसके चेहरे पर वही ओज है
जिसकी दूत में हमें खोज है'

देवताओ ने मान ली बात
नल एक लकडहारा राजकुमार
जो घम रहा था जगल मे बेगुमान
चुना गया देवताओ का दूत
दमयन्ती का स्नेह झुकाने
नल के भर दिए गए कान

(२)

निष्कपट हस - सा नल
दमयन्ती तक आया चल
सखियो की हँसी के बीच
नल ले गया अपने को खीच

'आप ह दमयन्ती राजकुमारी

मुझे सुनाना है रूप-गुण-कम का लेखा
उन देवताओ का जिन्हे न आपने देखा
म आया हूँ सरल करने
आपका कल का काम
उन जगमगाते देवताओ मे से एक
अपना प्रिय वरने'

सखिया बैठ गइ आराम से
नल बोला था इतने शील से

दमयन्ती देख रही थी नल को
नल जैसे कोई उत्तर हो

नल बोला इन्द्र सुरेश्वर
उनका वज्र - सा कर,
ऐरावत पर चढ गई कल्पना
सखियो के झुड ने सुन लिया
दैत्यो का उत्पात और हारना

नल ने वरुण की कथा कही
अनन्त दिशाओ मे वही
मणियो की लगा दी गणना
अथाह हृदय की कल्पना

सुख-वदन गणेश को सराहा
शून्य मन शनि को सजाया

चन्द्रमा के मृदु साज पर बोला
चाँदनी - सा मोह खोला

दमयन्ती के निर्निमेष रहे नयन
नल की बाते इतनी रूपवती थी
इतने मनोहर थे उसके वचन

'दमयन्ती राजकुमारी अब दो विदा
मेरे खयाल मे मै सब कुछ कह चुका

तुम्हे सौभाग्यशाली हो
स्वयवर का समय'

'रुकोगे कल तक तो न? भूल जाऊँ
किसी का कोइ गुण तो, सुझा देने'

'अच्छा मुझे भी कुछ कौतूहल है
तुम्हारा कल का काय मुश्किल है'

(३)

लम्बा चौडा था दरवार
पक्ति पर पक्ति उम्मीदवार
एकाएक हुए अभिमान भरे शव्द चुप
कलह कोलाहल चुप

हसिनी सी आइ दमयन्ती
धीमे कदम
रूप के बोझ से दबते
ग्रीवा झुकाए दमयन्ती

तन गए वक्ष, स्मित की वढ गइ माग,

दमयन्ती के कदम वढते
देवताओ को छोड साँस भरते
नल ने सोचा फिर लौटेगी
आ गई पास कुछ पूछेगी
दमयन्ती के ऊँचे उठे हाथ
जयमाला के भार के साथ

मूढ-सा होता नल का हृदय
एक स्मित से हो गया सरस
ठडे फूलो का परस

(४)

देवताओ को राह मे कलि मिला
'आप लोगो का दूत खब निकला'
सब हारे लौटे जा रहे हो
लिए बिना वदला'

देवताओ पर चढ गइ मत्रणा
पहुँच गए अदृश्य हो सव
जहाँ नल और दमयन्ती
पहुँच रहे थे तव

नल दमयन्ती बैठ रहे थे
साधारण से जीवन मे
दिन रात के घेरे मे
जव देवता कुटी से कान सटाए
ये वाते सुन पाए—

'मन के वैभव भी विचित्र है
देवताओ को छोड मुझे चुना!
वतलाओगी दमयन्ती क्या हुआ'

'मै राजप्रासाद मे आइ
स्मृति बार वार सहलाई
पर इतने खडे देवताओ मे
न किसी को पहिचान पाई

पहला इन्द्र था क्या?
तुम्हारे ऐश्वय का बखान -
मुझे आया ध्यान
और वह अकड़ा देवता
रह गया सिर्फ फूटे गर्व समान

वरण नही लगा गम्भीर
याद कर तुम्हारी वातो का क्षीर
हर देवता अपने से कम था
तुम्हारा चुप - सा चेहरा
ज्यादा कह चुका था'

नल ने नही की थी निन्दा
देवता गए शर्मिन्दा

पुष्कर विहार

अरावली पार कर
आए पुष्कर
विश्वामित्र ने देखा
मरुभूमि मे खिला
एक नील कमल
मग्न शिशु-सा चचल
और शात ताल पुष्कर
ऋषि गए ठहर

शख - स्वर - से प्रभात
सिहराते गात
चँवर डुलाती शाम
देती विश्राम

हर दिन ऋषि अधीर
करते साधना गम्भीर
आज जिस सत्य पर आते
कल उससे बढ जाते
अग्निशिखा-सी लगन
ध्रुव - सा स्थिर मन

फेरा कर आया वसत
हुआ कृश शिशिर का अत
पर ऋषि का नियम आचरण

अन्यमनस्क अत करण
न जान पाया कुछ हुआ नया
दूर सत्यो के पीछे गया
ऐसे तेजस्वी की यह् घोर अवज्ञा
मामान्य प्रकृति का अपमान हुआ

एक धुंधले सवेरे
तोते रहे पुकार
ऋषि ने नयन खोले
और देखा मेनका को
रूप मे भरे द्वार

स्वप्न नही साक्षात
पूव मे रजत भोर
एक नया उदय
एक नया प्रभात
मेनका मुस्कराती उनकी ओर

जैसे गिरिराज के शिखर
हिम से दब जाते हर शिशिर
पर वसत मे डाँवाडोल
हिम हिल उठता–हृदय खोल

उत्तुग शिखर मुस्करा कर
स्वच्छन्द करता निर्झर
मेनका ने यो किया चचल

विश्वामित्र का हृदय भरा रहता था
जैसे जल से ताल
एक आनन्द मे उडा रहता था
बडे डैनो का मराल

मेनका बनी हृदय का हार
एक वर्ष गया करते विहार

एक रगव्यूह में फँसी शाम
ऋषि के चरणो मे
मेनका झुकी रही कर प्रणाम-

'मेरे हृदय मे दाह सा जलता है
एक तुम पर किया कपट
लौट आती वह सुबह फिर'
मैं आती तुम्हारे पास
न किसी की आज्ञा से
अपने मन की मनणा से'

'बार बार वही पश्चात्ताप क्यो
उठाती हो मेनका यो
मैं तो तुम्हे दे चुका अभय
न मुक्त होते तुम्हारे सशय
तुमने मुझे नही गिराया
जो भी हो मूढ इन्द्र की माया
मुट्ठी मे ले ये केश दुहरा दू
या इस मुख की प्रतिज्ञा दू—"

'क्यो, मैने नही दिया तुम्हे साधारण
अपूर्व तेजस्वी तुम—'

'छि क्या साधारण है प्यार
या यह पुष्कर विहार

क्षितिज तक भर जाता सुख
जब प्यार मे उठता मुख
उस क्षुद्र इन्द्र सभा को भलो
इस पुष्कर मे परछाई लो'

'ऐसी ही दीन है तुम्हारी मेनका'

'मै कुछ बनाऊँगा नया
प्रतिष्ठित कर दूँगा सत्य
आदि है यह और भूला हुआ'

बूढे बडबडाते पडो से सुन लो
मोटे मच्छो को चने डालते
पुष्कर राज की महिमा
विश्व की एक जगह जहा
प्रतिष्ठित है ब्रह्मा
मोटे मच्छो को चने डालते

पर मेनका ने भी तो
सत्य लिया था अपने मे
जब विश्वामित्र गए उत्तराखण्ड
मृणालिनी नदी के किनारे
जन्म दिया था शकुतला को

मत्स्यगधा

एक धीवरों की कन्या
नाम से मत्स्यगधा
एक शाप से त्रस्त थी
उस रूपसी को चारों ओर
अप्रिय घनघोर
गध घेरे रहती थी

इस बदीगृह मे उसकी
युवावस्था घुलती घटती
अकेले नाव पर बेचैन
वह बिताती दिन रैन
साँझ सवेरे पाल चढा कर
स्वर्णप्रभा के विशाल वक्ष पर
चली जाती वह दूर दूर

नदी की बढी लहरे
शिशिर मे होती शात
ग्रीष्म के घटते तट
फिर पा जाते प्रात
एक मत्स्यगधा का हृदय
निराशा मे रहता लय
वशी सा उसका स्वर
कभी गा उठता हृदय भर-

'भाग्य ने मुझे क्या किया
मछली होती या कन्या

यह एक का शाप दूसरे पर
मुझे उठाना जीवन भर

स्वर्णप्रभा सहेली
किस किस के व्यापार
तुमने लगाए पार
मुझे अकेली
तुम न ला सकी प्यार'

खोल रखे थे वाल
रूप का मछुआ जाल
मत्स्यगधा ने
स्नान के बाद सुखाने
एकाएक उसे ज्ञात हुआ
उसका एकात टूटा हुआ
किसी ने चरमराया था पाल
दिशा बदलने के खयाल

चकित बैठी रही निरुपाय
भय से असहाय
पद - स्वर उसकी ओर
लाए एक तेजस्वी युवक
रह गया जो मत्स्यगधा पर
नयन डाल--ठिठक

यह देखते देखते रहने का क्षण
बढता जा रहा था हर क्षण

मत्स्यगधा ने श्रवण
ये कमन

'मुझसे भूल हुई देवि
मेरा उद्दण्ड स्वभाव
मान बैठा था ये भी
मुझसी भटकी नाव
बचपन से प्राण हैं मेरा
तोडना लहरो का घेरा
देखना नदी पर बैठती शाम
उठता श्वेत सवेरा
अब यही दीजिए उतार
किसी तट – किसी कछार'

नाव निकल चुकी थी
स्वर्णप्रभा के बीच
युवक ने वापिस मोडी
पतवार खीच

उतर चुका था युवक
तब पूछ पाइ रुक रुक

'आपको मेरे पास बैठे रहना
असह्य रहा होगा सहना
ये विषैली—''

'असह्य ? हा था
तुममे अजनबी रहना

सैकडो बसन्तो ने जमा की हो
एक देह में अपनी सुरभि को
ये मुझे लगा—''

'सुरभि? सुगध!
मेरी तो है घृणित दुर्गंध
मछेरे मछलियो की'

युवक ने उत्तर मे आ
मत्स्यगधा के केशो को
मत्स्यगधा को सूघने दिया

जैसे चदन का चूरा हो
देवस्थल में जलता
या माधवी का लाल पुष्प
दक्षिण मे हिलता

रो पडे मत्स्यगधा के नयन
उसका शाप टूटा!
राह पर गिर राह रोक—कहा

'तुम कोइ हो भटकते राजकुमार
कहाँ ले जाते हो मेरा सौभाग्य
मान लो मुझे नाव का सक भाग
स्वणप्रभा पर सातवी पनवार!
हृदय मे तुमने मुझे किया प्यार
एक ही क्षण को शायद
क्योकि वही मत्र-किसी पुण्य हृदय मे जाग
मुझे दे सकता था निस्तार
साक्षी मेरा उद्धार'

जिन्हे मेरे अलौकिक आख्यान पर
होता हो सशय
वे देखे स्वण प्रभा पर
सूर्य्यास्त और सर्योदय

(राज्य कमचारी, प्रियवदा, दुष्यन्त, शकुन्तला, कण्व की ध्वनियाँ)

(१)

'क्या देखा है कही
तुम लोगो ने
शिकारी राजा दुष्यन्त
हम उसके कमचारी है
जिस तरफ मन का हिरन
कुलाँच जाता है
धनुष की टकार दे
वह उसी तरफ जाता है-'

(२)

'चलो बच चलो शकुन्तला
आज जगल मे हलचल है
समाप्त कर ले खेल
तेरे रूप की शाति तो
बाँध देती है
जैसे तालाब का तट
तालाब को
नही पछुवा के दिन
पर पश्चिम के पेड हिले हैं'

(३)

'मैने आज तक अपना
अह बना रखा

जो करना चाहा किया
मन के कदम हटाना पीछे
नही सीखा
मैं बेंध देता हिरन को निश्चय
निशाना तुम्हारे रूप ने हिला दिया'

'स्वागत दुष्यन्त
राजप्रासाद के आनन्द
इन खुली हवाओ मे खिल जाओ
ये मेरी पुत्री है
अभी इसके वर्ष नही बने गम्भीर
इसका जीवन नई नदी है'

(४)

'ले आया हूँ तुम्हें यहाँ
मन इन दिनो भरा भरा रहता है
न रखो मुँह पर हाथ
कम होता चन्द्रमा
न गिराओ मुझमे आँख
अपने से ही खेलेगे तुम्हारे हाथ?
जिस जीवन से मैं रथ मे आया था
उसमे न लौटाओ
मैं तो बनना चाहता हूँ
सुगध तुम्हारे आस पास'

'तुम्हारी बाते है कहानियो-सी
मन को रखती बाँधा
एक मेरी सी बेवकूफ झूठ को
क्या दे देती रूप!

तुम्हें मनमानी की आदत है
झक हो गई मेरी अद्वितीयता की
मुझसे माँगते हो इस स्वर में
जैसा बड़ा भारी देना हो'

(५)

'मेरे साथ चलो शकुन्तला
ऐश्वर्य से खेलना
हम जब निकलेंगे साथ राजपथ पर
उमड़ती भीड़ को देखना'

'यहाँ तुम्हारा मुझसे ही संबंध है
वहा होंगे बहुत
मुझे अकेला लगेगा
मैं खड़ी रहूँगी वसंत के जाने पर
खुली बाँह के पेड़-सी
तुम्हारी स्मृति मुझमें है
और इस शांति में बढ़ेगी'

'पहिन लो अपनी उँगली पर
ये कहानी सी निशानी
इसका नग अदृश्य है शकुन्तला
हमारे प्रेम का मोती'

(६)

'मेनका की तरह
शकुन्तला ने वह किया
जो मन के इन्द्र ने कहा
मुझे यह रहस्य मालूम है'

'शकुंतला के पुत्र जन्मा
चाँदनी का चन्द्रमा'

'यदि दुष्यन्त इस से मिल पाता
अपने ऐश्वय की पूर्ति पाता
फिर नइ कहानियाँ कहता
दुष्यन्त के सुख-अनुभवी मन में
एक नया आनन्द होता'

(७)

'खो गया फिर
हम लोगों का राजा
मन का निकल गया तीर
वह वैसे ही अधीर'

(८)

'खोल लो मेरी उँगली से
वह कहानी-सी निशानी
मैं तुम्हें लाइ हूँ सत्य
तुम्हारे स्वप्नों का
मन से नहीं डरने का
तुम्हें गए हुए कितने वरस
ये मेरे साथ खेला'

'तब चलो राजप्रासाद में रह सकेंगे
हमारा सबंध अब निडर बन चुका
हम अब इसे बहते देखेंगे

चन्द्रा (३)

डालिङ्ग—अब हमारा सुख यही
देख पाना तुम्हारी जिन्दगी सुखी

दो बडबडाते बुड्ढे तुम्हारे पिता और मैं
कुछ देर ही यहा पिएँगे—और हैं

समूह

समूह

जिस समय हमारे समूह के ऊपर
किले की दीवार पर बैठे
कबूतर उड पडे—सुबह मे छायाएँ थी
और एक सुनहली चेतना

इतना शात विश्वास समाया था
हम ठीक हैं—यही राह है
कबूतरो के झुड के साथ
हमे ज्योति के पख ने सहलाया था

शत्रु

जब तक हू
　　　　　　　मुंह चिढाएँगे—समाज
हमारा अत कर दो
हम बहुत हैं टोली मे
कुरूप, विकृत, असफल
अतृप्त, बदनाम, अपराधी
जिन सब की असभव इच्छाएँ थी
बाकी जीवन भर
　　　　　　　कड़ुवापन बढाएँगे

हमारा अत कर दो

हमारे लिए

गांव की लडकी
क्या लाऊँ तेरे लिए?
दूसरी धोती

गन्दे मुँह बालक
क्या लोगे तुम
जीवन का पहला स्वेटर

पर इतने है हम
(बढती जनसख्या
प्रगति मे बाधा)
लाना कुछ सस्ती-सी चीज
मौत या प्यार जैसी

भाग्य

जिसे पसद था
रग विरग - उजलापन - हँसी
जिसकी इच्छाएँ थी साधारण
अकलुषित और तीव्र-सी
हृदय का सदा पूरा खिला फूल

उसे दिया
करुणाहीन परिवार-शक्की पति
बीमारियो से घुली देह
रहने को विजलीहीन दूर गाँव
एक रद्दम घर मे वदनसीव

मानदीन

टाइपिस्ट

मुंह कुछ सांवला
और कुछ उडे से बाल
(बडे शहर का धुंआ
उज्ज्वलता किए म्लान)

मैं अब न पहिचानूगी
अपने जीवन के पहले तीस वर्ष
कॉरिडर मे
गदी बातो से बचते गए

हफ्ते के अत में
एक मार्निङ्ग शो
फिर झझटो मे वह भी नही
तीसरी मजिल में क्यूबिक्ल
रोज क्लार्को की हजार साइकलो में
मेरी भी साइक्लि

पत्थर

पत्थर के वने मकानो मे
कुछ ज्यादा शाति रहती है

वुहारी के वाद
पत्थरो के चेहरे
कुछ ज्यादा साफ
कुछ ज्यादा सीधे

ईटो के मदिर
या शिवालय !
मेरे खयाल से
भगवान
पत्थरो मे ही आते है

फिर पत्थरो का मकान
कुछ प्रकृति का भी वना होता है
ईट तो सिफ

मनुष्य का सूखा
टुकडा है

प्लैन्स

भविष्य का सबसे भीषण स्वप्न
सिविल सरवेंट्स का फैलता धब्बा
सब कुछ माँगने पर—राशन्ड
स्वार्थ की बढ़ती आवश्यकता
(अथवा अंत)

मिग वाज

किसी भी टूटे हृदय का मिग वाज
किसी भी मजबूर की जली आँखे
(आकाश मे नए ग्रह की चमक)
कोई भी असतुप्ट, विकृत, मोहताज
इतिहास मे इस समय की निशानी छूटे

एक मीरा

मुझे काफी नही है
अस्पष्ट-से, अतृप्त स्वप्न मेरे
कुछ तीक्ष्ण मागते प्रतिदान अक्सर

समृद्ध गृहस्थ, पनपता - घर
ठीक है, पर
मुझे काफी नही है

चॉदनी की ढलती सतह
क्या युवराज प्रेमी का प्रणय
रख देगा मुझमें कुछ खोल कर
एक गॉठ मुझको कचोटती रही है

मुझे जिस सबने घेरा है
जिस सब की मैं, जो सब मेरा है
मुझे काफी नही है

रामकली

लोई-सा तन
व्याह के समय का पाँजेब
एक चिटका विवाह
उसे लाया हमारे घर
छोटे बच्चो की आया
गोल बडी बिन्दी
मुँह खिलाती
'जल्दी दूध पीलो'
व्यस्तता जताती
रात भर मथते रहे—
—मन की यन्त्रणा
साल के पेड
खिडकी के बाहर
उन बचपन के दिनो पर
बारिश का कोहरा-सा
लाल पगडी पहने कालीदीन
सरवैण्ट्स क्वाटर मे ऊधम
लम्बी पचायती बाते
ढोल-महुआ-चिलम
मेमसाब से विदा माँगते
दूसरे घर जाती बहू रामकली
व्याह के पहने पाजेब

कही   चाटवाले   की पत्नी
चार बजे से काम-धुएँ की कोठरी
दूसरे   वर्ष   गोद   मे   क्षय
'भैया अस्पताल का पता लिख दो'

एक चन्द्रा

शराब पीते पीते दो अधेडो ने
हाथ मिलाया पक्की कर ली बात
गाली देने से जवानी जाती जाग
यदि तेरे लडका हुआ और मेरे लडकी

कालेज मे चन्द्रा बहुत हँसती थी
बचपन मे चाचा जी के यहाँ
एक स्माट - से लडके ने कहा
यह हमारी बहू है हमसे शर्माएगी
फिर वह गोली खेलने चला गया

अब हम पति पत्नी है
मै और जोगिंदर
मेरी शिकायते
अलग क्यो नही बसाता घर
सनी होने के दिन
कही बम्बइ था
ये शराब की बडी बडी पार्टियाँ
मुझसे पूरी न हुइ साध उसकी

मुझे क्या बचा
छोटे छोटे विरोध

कमरे मे सिगरेट पीना
नौकरी कर लेना
लेडीज होम जनल कितना ही कहे
मुझसे पूरी न होगी साध उसकी

मेरी भी तो साध पूरी न हुई
आदर आश्वासन कहाँ मिले
मुझे कोइ बनाए बडा बडा बडा
मैं जिसके सामने सकुचित होती जाती

दो बडी बडी भूरी आखे
हड्डियो के चेहरे मे उसके
चन्द्रा चन्द्रा

रुप को तो गर्व चाहिए
ये आश्वासन माँगती शर्माएँ
चन्द्रा चन्द्रा

दुबली-हल्के बाल
विफल डाँटती घर के कुत्ते को
मिल तुम्हे परियो के देश
ओ भीगी स्पैरो
चन्द्रा चन्द्रा

अजमेर बरसात के पहले
बरसात के बाद

चारो तरफ जले टीले
उतरा अनासागर
दिन भर आँच-सी भागती हवा
कहा जाए शाम को

देखते देखते तारो ने भरा आकाश
बादलो ने बदल दिया अजमेर

आ गइ सडकें
वादल पहिने
पहाडो के नीचे
हरदम छलकता मौसम
शहर की कहानियों-सी बत्तिया
रहस्य-सा वढता अनासागर

वेकार अयोग्य फूहड
सदा मदा ठडा घर
न रुचि न रहस्य
मुझे तो नीद आजाए अच्छा हो
कोने हिस्से भीगते जाते ठड मे
दूसरा के घर की ओर
दो प्रश्न चिन्ह-सी जलती खिडकियाँ
इर्ष्या का सदा रहता हल्का ज्वर

कूचो और गलियो मे प्रेम की वास
चुस्त हो गए हैं स्वप्न हर तरफ
चौसठ पेज मे से कापी का एक पेज
डाकिए के भरे थैले
हिन्दी अग्रेजी मे वडवडाते उच्छ्वास

मेरी, न उसकी, पूरी हुइ साध

उत्पादन के रिश्ते

उत्पादन के रिश्ते
व्यक्ति के प्रकृति में स्वतन्त्र
प्यार के नही पगार के
जिनसे पूँजी का बढता जहर

प्रकाश और प्रकाश
जीवन और जीवन
पद द्रव्य के अवतरण के बाद
प्रगति की दिशा
पूजी और पजी

उत्पादन के रिश्ते
व्यक्ति से बना समाज
प्यार से नही पगार से
आदरहीन को आदर
एक दूसरे मे सुख नही
जरूरत
बडे आफिसो फैक्ट्रियो का
घुटता सामीप्य
समाज व्यक्ति की शक्ति नही
बाजार

उत्पादन के रिश्ते
प्रकृति की सत्ता का
सबसे सम्पूर्ण उपभोग
इतिहास की दिशा
मार्क्स सोचता था

अपनी शक्ति के पूण
उत्पादन के वाद
खुद ही हो जाएगा
विध्वस पूंजीवाद

पर उसका दूसरा आवाहन
मिलो विश्व के कर्त्ता
वचित मजदूर
तुम्हे खोनी सिफ जजीरे
पाने को है एक नया विश्व

मार्क्स की गढी घृणाएँ
आज भी क्रांति की शक्ति
हमारे गिरते युग को
आ गई चेतना शायद
सहारा पा गए लडखडाते कदम

(टायनवी का कहना
सभ्यता को पहली वार
अपने ह्रास की चेतना)

उत्पादन के रिश्ते
एक की वजाए दूसरे
वही व्यक्तियो का
स्नेह-रहित सगठन
फैक्ट्रियाँ मजदूरा की हो जाएँ
मजदूर रहेगे फैक्ट्रियो के

कर्त्ता का काय से सवध
उल्लास मय विकास मय
मजदूर की मशीन पर विजय

व्यक्ति समाज का
संतोष से अंग
उल्लास मय विकास मय
उत्पादन में रिक्ता में हृदय

एक पिता

मेरा साम्राज्य प्राविडेण्ट फड की कृति
मेरा मकान खाली है दोनो मजिल
सदा खाली ही रहा
लडके दूर लग गए
खाँसता सस्ता माली
उद्दण्ड होता नौकर
यह स्मारक ही बना
मेरे इतिहास चाहने का
स्मृतियो की धूप ढल गइ

किम के घर जाऊँगा इस शिशिर
स्नेह का बुलावा-पत्र मे आखिरी लाइन
बच्चे याद करते है
जरूर आइएगा
सम्मानित अतिथि
जरा जीवन की राह मे
मेरी मर्य्यादा भय है
कभी भी अशिष्ट हो जाए समय

एक सतति सिफ
बाकी कुछ स्मरणीय नही
अपने पुत्रो को ही दिया

दिया क्यो कि हृदय भरता था
मै हूँ असहाय, खाली खँडहर
वाणिज्य सरका, पुल टूटा
साझ तक जाते पिकनिकर्स दिल बहला

साठ वर्ष के बाद
असम्भव नए नाते
चुक गई हृदय की डोर
अखबार, चश्मे का फ्रेम
होली, दिवाली, समय पर दिए टैक्स

धूप में दूर दूर तक
गिरे शहर चन्द्रावती के खँडहर
सूरज ही पुकारता इन्हें अब
सूख गई नदी, गई समृद्धि सब
शाम को लौटता बकरियों का भुंड
दोनों तरफ टीले-मंदिरों की नींव पत्थर

साँझ ही फूलती है
एक पश्चिम का फूल ही
इस गिरे ईंटों के वीराने में
राह बदल देता है जीवन
कहीं और—किसी और में
हमसे संबद्ध इतिहास
एक अस्पष्ट आभास
जीवन यही था हममें उनमें
एक चेतना का बिंदु-समय और स्थान

मैं छूटी पगडंडी हूँ
कहीं और चले गए चरण

मुहूर्त

मुहूर्त

उसने कहा
  कुछ देर मे चाँद
  खिडकी से निकल जाएगा

ये तुम्हे देखने का
  ——वसन उतार डालो
  मुहूर्त्त निकल जाएगा

चांदनी रात

तुम्हारी दृष्टि देख हँस देते
करवट मे बादल
हवा का महीन रेशम
फिसलता विश्व पर

फ़ैवचर्ड स्वप्न

यही तो स्वप्न था
कार मे आओगी
मेरे न मानते न मानते भी
पुराने क्रोध की बात के बाद
सदा रहेंगे साथ
जैसे तटो मे बँधी
खोल दी जाए नाव

कार मे कल कोई आया था
एक फ़ैवचर्ड स्वप्न

कोई तो आकाश

क्या इतनी इच्छा
देह तक ही रह जाती
कोइ तो आकाश
हिलता होगा इस से

•

यात्रा का अत

यात्रा समाप्त हो गइ
पर खडखडाते रेऌ के पहिए
चलते जा रहे है
कल कहा उठूगी

हृदय से हुइ लापरवाह
आस और हिचकियाँ
चलती जा रही हूँ
कल कहाँ रुकूगी

कोई

[illegible]

[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] घनी
[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] पाना
[illegible] बन गया
[illegible] [illegible] मर गया
[illegible] ही [illegible] पर

दूधिया सुबह

दूधिया सुबह
कमरे मे होती घनी
कहाँ तैर गए
मेरे नरम खयाल

जहाँ समय का पानी
ताल बन गया ।
तैरते रहें मेरे खयाल
तुम्हारे ही सदभ पर

वर्षारम्भ

पेड वैसे झुक झूम रहे
जैसे किसी ने खेल खेल मे
इन्हे हँसा दिया हा
ना ना करते
इधर उधर बचते

पत्तिया करती नही नही
चीर खीचती हवा गइ
फिर सबने अपना हृदय
खोल दिया वर्षा को

इन्तजार

सब काज रख दिए
—जब तुम आओगे
हृदय अकर्मण्य
मुंह छिपाने का कोना भर
जीवन दे दे तब तक

मन प्राणो से सब
मैं हो जाऊँ चुप
हमारे बीच का अतरिक्ष
तरगित
हो जाए स्थिर
क्या सुन सकोगे यह कसक
यह अनकहा अकेलापन

क्या मैं याद आया
कितनी बार
सच बताना
इस सूने कमरे की शपथ
मैंने तो ली साँस
तुम्हारी ही स्मृतियो मे

वर्षारम्भ

पेड कैसे झुक झूम रहे
जैसे किसी ने खेल खेल मे
इन्हे हँसा दिया हो
ना ना करते
इधर उधर बचते

पत्तियाँ करती नही नही
चीर खीचती हवा गइ
फिर सबने अपना हृदय
खोल दिया वर्षा को

विदाई

ले लें इन आखिरी शामों की
उदास-सी सुगंध
मेरे साथ चलने में
झिझकते हैं तुम्हारे कदम
कल जब तुम मेरे मित्र भी न रहोगे .

प्यार के शत्रु

शिकायत करूँ तो क्यो
वह वह है म मैं
प्यार की इकाइ मे बँधे
हम बचे रहते दो

दोनो को प्राप्त ह अपने
विश्व करीब करीब पूरे
हम जी सकते है—जी चुके ह
जीवन अधूरे

हमारा धैय—हमारा अनुभव
प्यार के शत्रु ये

विदाई

ले लें इन आखिरी शामों की
उदास-सी सुगंध
मेरे साथ चलने में
झिझकते हैं तुम्हारे कदम
कल जब तुम मेरे मित्र भी न रहोगे

प्यार के शत्रु

शिकायत करूँ तो क्यो
वह वह है म मैं
प्यार की इकाइ मे बँधे
हम बचे रहते दो

दोनो को प्राप्त है अपने
विश्व करीव करीव पूरे
हम जी सकते हैं—जी चुके है
जीवन अधूरे

हमारा धैर्य—हमारा अनुभव
प्यार के शत्रु ये

दिदधू में शाम

दिदधू के पश्चिम
ओरन की बाहों में
ताल - सा क्षितिज
एक सलेटी गोधूली
छा गई हृदय पर

कितने दिन जुड आए
मेरी आखो मे उस शाम
तुम लोग कही गए थे
सरसराते थे पेड

एतराज़

इसका एतराज नही
जीवन न बना सस्कृत
रहा फूहड
आदतें न सुधरी
रहे आवारा
गुणों का मूलधन
खच कर मारा
तुम मिलती तो ये सब
शायद बिगडते नही
पर इसका एतराज नही

तुम्हारी ज्योति के अलावा
मामूली मगलमय जीवन-
की इच्छा मुझे हुई नही

सितम्बर

भीगा सिर
सुबह की हवाएँ
ठडे न्हाए हाथ
दौड जाते देह पर

देह से बँधा मन
उड जाता उड
सुख की छोर पर
डगमगाता

मार्च की रात

रात भर कभी कभी
एक सूखी पत्ती
छत से टकरा कर
बरामदे से बहती
मार्च की हवाओ मे
गुम हो जाती थी

हवा की मरोड - दौड - फिसलन
में राह जोहता
कब गिरेगी अगली पत्ती

कोमल सलेटी चाँदनी
खिड़की में - एक चित्र - सा
पेड का द्विभाजित तना
में चाँदी की सुराही लिए
खडा रहा कुछ देर
फिर कुछ देर और—

पीछे से तुम्हारी आवाज
'पानी मुझे भी देना'

अगले साल

तुम्हे इतनी फिकर है
मै बन रह जाऊँगा
एक और फिकर

बिलकुल भूलोगे नही
आएगा तुम्हारा क्रिसमस कार्ड
यदि मिले - खुश होगे

कौन किस के मन में
इससे ज्यादा रहता है

रोड साइड

सोचते सो गए
पानी के पोखर
स्वप्न में, सड़कें साथ साथ
लेटे दूर तक

आकाश इनके हृदय मे
बादलो का आना जाना
कहते कहते रुक गए
ये अधूरे वाक्य धरती पर

ट्रंक कॉल

क्या टेलीफोन की घंटी
तोड़ेगी नौ का समय
या अविजित जाएगा
क्या वहां भी इतनी
अगुवानी में सहा
क्या ऐसी ही जिद
कर रही होगी घड़ी

'जैसलमेर दीजिए
सिक्स सैवन सिक्स'

अचेतन

रात भर डीलडौल वाला प्रेम
मुझ पर चढाइ करता रहा
कहाँ गए उज्ज्वल सन्यासी विचार
मन के वीभत्स सस्कार,
करवटें बदलता रहा

कारण

साथ सोना सुख था
कपोलों से सटा मुख
यह न मानना कभी—
रात के करीब ढलने पर
चिडियाँ जब चहकी थी
पहले पहल
मैं आ गया था तुम्हारे पास—
सोने सिफ इसी लिए,
यह न मानना कभी

सहसा

कप के पीछे
मुस्करा दी
सहसा
हृदय पर धक्का कैसा?
क्या मैं कह रहा था?

मुझ पर फेंक दिया
अपना प्यार उलझा
कप के पीछे
मुस्करा कर सहमा

कल !

क्या कल भी
मुझे याद करते
स्निग्धता चूम जाएगी
तुम्हारी आँखें

नो रिग्रेट्स

तुम्हे घर पर छाडने के वाद
मै कार मे वैठा रहा
जाडो के धुध मे
तुम्हारे वरामदे मे मुड जाने के वाद

हो सके इसे रिग्रेट न करना
भूल जाना तो भूल जाना
जाडो के धुध मे वैठा रहा मै
ओह तुम्हारा जैसा प्यार करना!

हँसी

मुझे आ गई हँसी
वह न रुक सकी
दो प्रौढ़ो की दूरी
इस तरह टूटी

फिर चुप्पी स्कूल मास्टर ने
जमाइ क्लास
पर हमें तो हँसी
आ चुकी थी पास

तुम भी मुस्कराते
न रुक सकी
मुझे तो आ गई हँसी

साल गिरह १९५९

तुम्हारी आज साल गिरह थी
आख खुली – बजता था कही
पुलिस का बैंड सुबह सुबह
हर तरफ हर्ष के लक्षण
दिन भर मिले इसी तरह

जैसलमेर का हर कोना
खुश था और चाहता था
तुम्हारा यहाँ होना

बाकी

बस मुझे क्या बचा—
किसी उज्ज्वल तारो की रात
गजल-सी गुनगुना लेना
एक भूली भटकी बात

सिनेमा के फॉयर मे प्राय
सदा की तरह देर में शायद
आने ही वाली होती है
वह मेरे जीवन मे प्राय

खुशी

मुझे इतनी खुशी हुइ
कि मै रात भर जागता रहा
सारी रात कुछ न लगी
सुबह तक मन में हँसता रहा

लाज

पक्षी जैसे उतरे
सफेद पख खोले
वक्ष पर किए वहन
आकाश का गहरा वजन
धीरे धीरे

तुमने कहा था मुझे
अपनी बाहो में लेते
छोडती हूँ लाज
आज से
धीरे धीरे

दुबारा

कैसे अबोध हो गया हृदय
मैं तो न था ऐसा
लज्जाशील एकाएक
बीस साल पहले का

क्या धुल जाएगी इस तरह
यह पिछले वर्षों की मलिनता
दृष्टि पर बडी धृष्टता

ओस से भीगा
सर उठाता है
सकोचमय प्यार
लो दूसरी वार

पहली बार

शाम मे बहुत चिड़ियाँ थी
लुट रही थी सुनहली हवा
कमरे के एकान्त मे मैंने
तुम्हारा नाम हल्के से कहा

बेवकूफी

कल याद करोगी
किस तरह
मुस्कराहट की फीकी
शाम में

यदि कुछ कहोगी
क्या यही
उस पास बैठे से
हम कभी कर बैठते हैं
क्या क्या बेवकूफी

स्वप्नो के हस

तुम्हारे सिरहाने
स्वप्नो को देखा
शान्त झील मे मग्न हस
भाग्य की मृदु होती रेखा

वे सफेद, कहाँ गए
आँख खोलते ही
तुमने कुछ न समझ
मुस्करा — मुझे देखा

सरकिट हाउस जोधपुर

गर्मियो की सुबह
स्पश सुनहले
इतने दिनो बाद
यह मुंह तक आते पेड

रेल का गम्भीर धुंआ
हल्के पांव चल दिया

लान मे खुशनुमा प्रभात
एक दो चिड़ियां

१३

एक शाम

फिर धुंधला गई शाम
मैंने तुम्हारे चेहरे पर
एक बार पढा प्यार
फिर धुंधला गइ शाम

क्यो

तुमने मुझसे क्यो कहा
कुछ देर रुक जाओ
तब से तुम्हारे पास
रुक गया हृदय

मुझे तो आदत हो रही थी
सुबह और शाम करने की
तुमने मुझसे क्यो कहा
तुम्हारे रोज उदास इतने क्यो

घाटी के शोर

जितने पेड हिल रहे हैं
हवा मे आज रात
घाटी के सब शोर

—गूज रहे ह हमारी बातो से
—सहल किए प्यार का
हप-सा हल्का शोर

—जो छोड दिए हमने मुक्त कर
हृदय के छिपे चोर

खारापन

हमारे हर्ष के नीचे
व्हेल - से प्रयोजन
अस्थायी द्वीप
खारापन

यहाँ

जीवन मीठा है
तुम्हारे खयालो के
आसपास होने से
–मुझे घेरे होगी
तुम्हारे मन की बाते–
इस कल्पना मे
मन डूबा है

ये हवा - हवा
लगती - सी है
मै यहा हूँ
और यहाँ को
तुम्हारे अनुभव से
ठगती - सी है

राह का बाग

मिलोगी ? मन पूछता है
रात भर पूछता रहा
रेल की खटकन में
पास आता था तुम्हारा शहर

जब किसी पर कोई
अधिकार न हो
पाऊँगा सिर्फ भटकन
प्लेटफारम पर फैला उदास
सुबह का पहला पहर